होता है। अतः कवि द्वारा निर्मित इस नगर के विषय में कौन नहीं पढ़ना चाहेगा।

(3) कामो व ~~सुरूपसार नरवर नाथकेक~~ समाणंगो इंदो, इव .... ~~क कहुउदन्~~ 19 नाम नन्नाहो ॥

व्याख्या भाग —

प्रस्तुत गाथा में कवि महेश्वर सूरि गजपुर नाम के नगर के राजा भूपाल की महानता का विवेचन करते हुए कहता है। राजा भूपाल कामदेव के समान सुन्दर, सुन्दर गुणों द्वारा सुशोभित, इन्द्र के समान, कौरव वंश में उत्पन्न राजा था। भूपाल राजा न्याय प्रिय राजा था। वह दुष्टों को कठोर दण्ड भी देता था।

(4) जो ~~व व्व~~ चिय पालइ पुहइ सो चेव - ---- अह लुटाओ ॥

व्याख्या भाग —

प्रस्तुत गाथा में राजा भूपाल के नाम की सार्थकता तथा उस नगर में रहनेवाला एक वणिक का विवेचन किया गया है। कवि महेश्वर सूरि कहते हैं कि इस संसार में वही भूपाल कहलाता है जो पृथ्वी का पालन करता है और जो न्याय प्रिय हो। तथा जो अन्याय में रत है वह राजा तो चोर एवं लुटेरा ही कहलाता है।

(5) विहवेणं गुरुयत्तं विहवेणं - ------ वसण परिहाणी ॥

प्रस्तुत दोहा में कवि वैभव अर्थात धन की महत्ता पर प्रकाश डाला है। कहा जाता है कि वैभव यानि धन सम्पत्ति से ही मनुष्य श्रेष्ठ कहलाता है। तथा वैभव रहने से ही स्वजन एवं परिजन नजदीक रहते हैं। वैभव नहीं रहने से सभी पराये के समान देखते हैं। अर्थात अपना भी पराया के समान हो जाते हैं। वैभव से ही भावों की शुद्धता एवं वैभव से सभी कष्ट दूर हो जाते हैं।

(6) सा चेव हवइ भज्जा पइइकं - --------- वइरिणिया ॥

प्रस्तुत गाथा में कवि पत्नी के विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए कहता है कि सच्ची पत्नी वही हो सकती है जो प्रतिदिन अपने पति की भलाई में लगी रहे। अन्य प्रचण्ड स्वभाववाली पत्नियाँ तो गृहणी के रूप में पति की शत्रु ही होती हैं। जो सच्ची पत्नी होती है वह अपने पति को देवता के समान मानती है और सुखी जीवन व्यतित करती है। तथा जो प्रचण्ड पत्नी होती है वह अपने स्वभाव से अपने घर को नरक बना देती है।

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner